कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

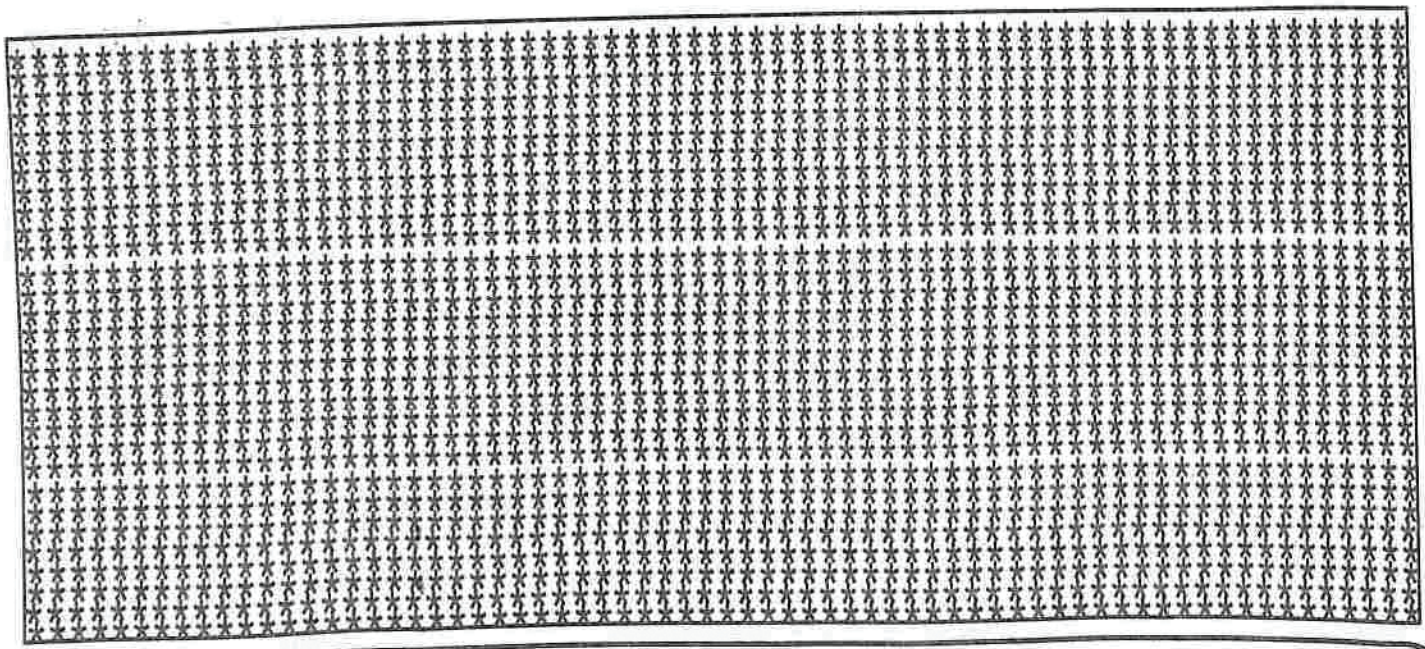

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं. 1-3 का उत्तर

* ═══ × ═══════ × ═══════ *

① आधुनिक काल की सशक्त नारी या नारियों का आत्मविश्वास।

② नारियाँ अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ व शिक्षा के प्रचार-प्रसार से पूर्ण रूप से आत्मविश्वास से भर गई हैं।

③ आधुनिक नारी ने आजादी की लड़ाई हेतु घर-बार छोड़ दिया तथा छोटे-बड़े, कस्बे या महानगर, पढ़ी लिखी या अनपढ़, गरीब या अमीर सभी नारियों ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई में योगदान दिया। इनमें प्रमुख:- सरोजनी नायडू, अरुणा आसफ अली आदि हैं।

प्रश्न सं. 4-6 का उत्तर

* ═══════ × ═══════ *

④ कविता में ऐसे आदमी को जगाने की बात कही गई है, जो अब तक सो रहा है अर्थात् जो अपनी जिम्मेदारियों व कर्तव्यों के प्रति सचेत नहीं है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

⑤ आदमी को वक्त पर जगाना आवश्यक है, यदि वह बेवक्त जागेगा (सचेत होगा) तो उसके जो साथी प्रगति के क्षेत्र में आगे निकल गए, वह उन तक नहीं पहुँच पाएगा तथा अपनी अवनति की ओर अग्रसर होगा।

⑥ घबरा कर अपने साथियों तक पहुँचने वाला व्यक्ति चेतन-अवस्था में सजग नहीं रह पाता, जबकि क्षिप्र-गति वाला व्यक्ति सही-क्षण पर सचेत होता है, तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करता। घबराकर भागने वाला अपने आगे निकले लोगों तक पहुँचने में विफल रहता है। अतः ये दोनों गतियाँ अलग-अलग हैं।

प्रश्न सं ⑧ का उत्तर

पत्रांक 2115/02 दिनाँक :- 16/03/2019

सेवा में,
श्रीमान् जिलाधीश महोदय,
जिला - मुख्यालय
उदयपुर (राजस्थान)

विषय :- जलसंकट के कारण अतिरिक्त वेतन मंगवाने हेतु।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

महोदय,
विनयपूर्वक आपको पूर्व पत्रांक १।१२।१।० में सूचित किया जा चुका है, कि हमारी तहसील भीण्डर में भयानक जलसंकट व्याप्त हो गया है। नदियों, कुओं का पानी सूख गया है तथा वर्षा भी पर्याप्त - मात्रा में नहीं हो रही है। इस कारण स्थानीय - जनता को जल पर अत्यधिक व्यय करना पड़ रहा है। जिसके कारण लोगों का आर्थिक जीवन - संकट में पड़ गया है। आप तो जानते हैं, कि जल है तो कल है।
अतः आपसे प्रार्थना है, कि हमारी तहसील में इस भयानक जल - संकट के दौरान उचित जल - प्रबंधन हेतु अतिरिक्त बजट भेजे जाने का प्रस्ताव स्वीकार करें। ताकि, लोगों का जीवन समृद्ध एवं खुशहाल बनाया जा सके।

भवदीय
धन्यवाद।
तहसीलदार (भीण्डर)
उदयपुर . मेड़ता

प्रश्न सं. ⑨ का उत्तर

=====×=====×=====

क्रिया :-
वे शब्द जिनसे किसी कार्य का करना या होना पाया जाए, क्रिया कहलाते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उदा॰ → राम चलता है।

→ यहाँ 'चलना' क्रिया से राम द्वारा किए गए कार्य का बोध होता है।

→ कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

* सकर्मक क्रिया :— इसमें क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है।

उदा॰ → राम रस-मलाई खाता है।

* अकर्मक क्रिया :— क्रिया का प्रभाव कर्ता पर पड़ता है।

उदा॰ :— वह सोता है।

प्रश्न सं॰ (10) का उत्तर

* ═══ × ═══ × ═══ *

* 'पत्र मोहन के द्वारा लिखा गया।' प्रस्तुत वाक्य में 'लिखा गया' में निहित काल :— भूतकाल

* वाक्य में 'मोहन के द्वारा' में कारक :— करण कारक (तृतीया विभक्ति

* प्रस्तुत वाक्य में वाच्य :— कर्म-वाच्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं. (11) का उत्तर *

* गजानन :— गज का है, आनन जिसका वह।
(शब्द में बहुव्रीही - समास निहित है।

* बहुव्रीही समास की विशेषताएँ :—
इस समास में कोई भी पद प्रधान नही होता तथा समस्त - पद एक विशेष अर्थ प्रकट करता है।
जिस प्रकार गजानन में कोई पद - प्रधान न होकर विशेष अर्थ गणेश प्रकट होता है।

प्रश्न सं. (12) का उत्तर *

(क) मुझे अभी जाना है।

(ख) मेरे पास केवल पचास रूपये हैं।

प्रश्न सं. (13) का उत्तर *

(क) अगर - मगर करना :— ईधर - उधर की बातें करना या स्पष्ट न बताना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

* वाक्य - प्रयोग :—

जब पुलिस द्वारा चोर से चोरी किए गए सामान के बारे में पूछा गया, तो वह अगर-मगर करने लगा।

(ख) आपे से बाहर होना :— अत्यंत क्रोधित होना।

* वाक्य प्रयोग :—

लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण वचनों को सुनकर परशुराम जी आपे से बाहर हो गए।

* प्रश्न सं. (14) का उत्तर *

अंधेरी नगरी चौपट राजा :— शासक की अयोग्यता पर धाँधली।

* वाक्य प्रयोग :— लोकतंत्र में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है तथा शासक भी भ्रष्ट व रिश्वत लेने वाले हैं। ये तो वही बात है, कि अँधेरी नगरी चौपट राजा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं. (15) का उत्तर

* **प्रसंग :—**

प्रस्तुत पद्यांश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा X के लिए संचालित 'क्षितिज' नामक पाठ्यपुस्तक के कवि 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूर-सागर' नामक ग्रन्थ के 'लीलाविलास' से उद्धृत है।

* **सन्दर्भ :—**

प्रस्तुत पद्यांश में कवि द्वारा श्रीकृष्ण और राधा के प्रथम-मिलन का वर्णन करते हुए, उनके मध्य हुई वार्तालाप का वर्णन किया है।

* **व्याख्या :—**

प्रस्तुत पद्य के माध्यम से कवि वर्णन करते हैं, कि जब श्रीकृष्ण व राधिका ने पहली बार एक-दूसरे को देखा, तो श्रीकृष्ण ने परिचय की पहल की। श्रीकृष्ण ने राधा से कहा, कि हे! गौरी तुम कौन हो? तुम कहाँ रहती हो? किसकी पुत्री हो? आज से पहले तो कभी तुमको ब्रज की गलियों में नहीं देखा। तब राधा ने कहा :— हम भला ब्रज में क्यों आतीं? हम तो अपने आँ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

की दहलीज पर ही खेला करती हैं।
परन्तु, मैंने सुना है, कि ब्रज-प्रदेश में नंदबाबा का लड़का माखन-दही चुराता फिरता है। ये सब मैंने अपने कानों से सुना है। राधा द्वारा व्यंग्य बाण कसने पर श्रीकृष्ण ने मधुरता से राधा से कहा :- हमने तुम्हारा तो कुछ नहीं चुराया। तुम मेरे साथ जोड़ी मिलाकर खेलने चलो। इस प्रकार आनन्द लेने वालों में श्रेष्ठ (रसिक-शिरोमणि) भगवान श्रीकृष्ण ने भोली-भाली राधिका को अपनी बातों से बहला लिया. तथा दोनों साथ-साथ खेलने चल पड़े।

* विशेष :- कवि द्वारा ब्रज-भाषा का प्रयोग किया है।
- पंक्तियों में उचित लय एवं गेयता है।
- उचित गति-यति है।
- श्रीकृष्ण व राधा के मिलन का स्वाभाविक वर्णन किया है।
- श्रीकृष्ण को 'रसिक-शिरोमणि' बताया गया है।
- 'सूरदास प्रभू रसिक शिरोमनि' तथा 'काहे को' में अनुप्रास अलंकार का समावेश है।
- उत्र के अनुसार सरलता व निश्छलता का चित्रण कृष्ण-राधा के स्वभाव में प्रकट होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं॰ (16) का उत्तर

——×——×——

* **प्रसंग :—**

प्रस्तुत गद्यांश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा X के लिए संचालित 'क्षितिज' नामक पाठ्यपुस्तक के 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' पाठ से लिया गया है। इस पाठ के रचयिता 'रामधारी सिंह दिनकर' हैं।

* **संदर्भ :—**

प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने ईर्ष्या से बचने के उपाय का उल्लेख किया है।

* **व्याख्या :—**

लेखक ने बताया, कि ईर्ष्या से बचने का एकमात्र उपाय मानसिक अनुशासन है। हमें अपने मन व मस्तिष्क पर नियंत्रण रखना चाहिए। जो भी व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे ईर्ष्या से मुक्ति का मार्ग खोजना चाहिए, क्योंकि ईर्ष्या सर्वप्रथम उस मनुष्य के चरित्र को भयंकर बनाती है, जिसके हृदय में वह उत्पन्न होती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति को व्यर्थ की बातों का चिंतन छोड़कर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

यह पता लगाना चाहिए, कि वह व्यक्ति किस अभाव के कारण ईर्ष्यालु बना है। वह क्या है, जो दूसरों के पास है, उसके पास नहीं है, जिसके चलते वह दूसरों से ईर्ष्या करता है। तथा उसकी पूर्ति का रचनात्मक अर्थात उचित मार्ग कौनसा है। जिस दिन ईर्ष्यालु व्यक्ति ने ऐसा सोचना प्रारम्भ कर दिया, उस दिन से वह ईर्ष्या करना त्याग देगा। और उसकी ईर्ष्या का एक दिन अंत हो जाएगा।

* विशेष :— कवि द्वारा ईर्ष्या न करने तथा उससे बचने के रचनात्मक तरीके का उल्लेख किया गया है।

- ईर्ष्या की हानि का उल्लेख है।
- उचित स्थान पर पूर्ण-विराम का प्रयोग किया गया है।
- मानसिक-अनुशासन को महत्त्व दिया गया है।

* प्रश्न सं. (ग) का उत्तर *

'प्रभो!' कविता 'जयशंकर-प्रसाद' द्वारा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

रचित कविता है, इसमें कवि ने प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का स्वरूप दृष्टिगत किया है। कवि ने ईश्वर के प्रति अपनी अटूट-श्रद्धा, भक्तिभाव व कर्तव्यनिष्ठा को व्यक्त किया है। कवि द्वारा ईश्वर की छवि को दृष्टिगत किए जाने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

* पवित्र-चंद्रमा का प्रकाश ईश्वरीय प्रकाश को व्यक्त करता है।
* ईश्वर की माया को अनादि व अनंत बताया गया है।
* सागर की अथाह जलराशि से ईश्वर के हृदय में व्याप्त करुणा-भाव का पता चलता है।
* सागर की उत्ताल-लहरें ईश्वर की स्तुति करती है।
* नदियों के निनाद में ईश्वर की हँसी प्रकट होती है।
* चंद्रमा की चाँदनी ईश्वरीय-मुस्कान को व्यक्त करती है।
* रात्रि में आकाश में जग-मगाते तारे ईश्वर के मंदिर जैसा प्रतीत हो रहा है। ऐसा लगता है, कि ईश्वर के मंदिर में दीपकों की शृंखलाएँ जगमगा रही हों।

इस प्रकार कवि ने ईश्वर की साकार छवि को चित्रित किया है। तथा ईश्वर को सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला बताया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं. (18) का उत्तर

जीवमात्र की समानता के प्रबल पक्षधर लोकसंत पीपा आज भी लोकगीतों व लोकवाणियों के माध्यम से अमर हैं। इन्होंने अपना सम्पूर्ण वैभव त्यागकर वैराग्य धारण किया तथा समाज-सुधार में लग गए। यह इनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता थी।

लोकसंत पीपा की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित है :—

* इनका मानना था, कि आत्मा ही परमात्मा है। साधु-संतों का घर शरीर है। पंचतत्वों से निर्मित यह शरीर ही परमात्मा है। पूजन की सभी-सामग्री इसी में है।
* ये निर्गुण-भक्ति करते थे। तथा बाह्य-आडम्बरों का विरोध करने की शिक्षा देते थे।
* इनका कहना था, कि सभी-जीव समान हैं, कोई भी छोटा-बड़ा न होकर के सभी एक ही ईश्वर की संतान है। अतः लोगों को भेदभाव न करने की शिक्षा देते थे।
* ये मांस-भक्षण के विरोधी थे।
* इन्होंने भेदभाव का विरोध कर, समाज

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के दलित लोगों को आत्मविश्वास से पूरित किया।
ये सांसारिक मोह - माया को व्यर्थ मानते थे
*

लोकसंत पीपा प्रारम्भ में गागरौन के राजा थे तथा मूर्ति - पूजक थे। परन्तु गुरु ~~समक~~ रामानन्द से दीक्षा लेकर इन्होने वैराग्य को धारण किया। जब लोग इनके वैभव - त्याग की बात सुनते, तो भीड़ की भीड़ इनके दर्शन हेतु पँहुच जाती थी।
इस प्रकार जीवमात्र के प्रबल पक्षधर लोकसंत पीपा आज भी हमारे हृदय में जीवित हैं।

प्रश्न सं. (19) का उत्तर
* ——— × ——— *

प्रस्तुत सोरठा "कृपाराम खिड़िया" द्वारा रचित नीतिगत सोरठा है। प्रस्तुत सोरठे के माध्यम से कवि हमें संदेश देना चाहते हैं, कि मनुष्य को हमेशा मधुर - वाणी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होने इसे उदाहरण देकर स्पष्ट किया है, कि
कोयल की वाणी को सुनकर सबका हृदय ~~प्रसन्न~~ प्रसन्नता व आनन्द से भर जाता है। कोयल की वाणी सभी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

को हर्षित व आनन्दित करती है। जबकि कौए का कर्कश-स्वर किसी को भी नहीं भाता तथा उसके कड़वे-स्वर का सभी तिरस्कार करते हैं। उसी प्रकार मनुष्य को भी कभी कड़वा नहीं बोलना चाहिए। कड़वा-बोलने वाले सभी दूर रहने का प्रयत्न करते हैं। इसके विपरीत जो मनुष्य मधुर-वाणी में बात करता है, वह सभी के हृदय को अच्छा लगता है। यह सब तो वाणी के गुण है। अतः कवि का मूल संदेश यही है, कि कटु-वचन न बोलें तथा सर्वथा मधुर-व्यवहार करें।

प्रश्न सं. (२०) का उत्तर

'मातृ-वंदना' कविता में कवि 'निराला' ने मातृ-भूमि के प्रति अपने सर्वस्व समर्पण व त्याग की भावना को व्यक्त किया है। कवि को अपने जीवन से कोई मोह नहीं है। वे तो बस मातृभूमि को ही अपना सर्वस्व भेंट करना चाहते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि अपने जीवन के सभी स्वार्थ, मोह अपने श्रम से अर्जित-फल माँ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

के चरणों में समर्पित करना चाहता है, वह माँ भारती से स्वयं को दृढ़ करने की विनती करता है। वह मातृभूमि के प्रति अपना बलिदान करना चाहता है। वह अपने में मातृभूमि के स्वच्छ छवि अंकित करना चाहता है। वह अपने जीवन के प्रति मोह को त्यागकर तथा अपनी मातृभूमि को अटल स्वतंत्रता दिलाने की खातिर अपने प्राणों का बलिदान करना चाहता है। इस प्रकार वह मातृभूमि के चरणों में न्यौछावर होना चाहता है। कवि अपने पुण्य, पवित्रता, परिश्रम से अर्जित श्रेष्ठ फलों को मातृभूमि के चरणों में समर्पित करना चाहता है।

प्रश्न सं. (२७) का उत्तर

"भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है।" इसके पूर्व में पठार-पहाड़, उत्तर में हिमालय पर्वत व उसकी कन्दराएँ तथा दक्षिण में कन्याकुमारी जैसे सुन्दर, मनोरम तथा प्राकृतिक क्षेत्र विद्यमान है। 'आखिरी चट्टान' पाठ में लेखक स्वयं समुद्र में उभरी एक स्याह चट्टानों पर खड़ा है तथा हिन्द-महासागर, अरब-सागर व बंगाल की खाड़ी पर के संगम-स्थल पर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स्थित अंतिम चट्टान को देख रहा है। कन्याकुमारी का सूर्योदय एवं सूर्यास्त अत्यधिक मनोरम है। हिन्द-महासागर में नारियल के वृक्षों से बनती स्याह-लकीरें, सूर्य-दर्शन आदि अत्यंत आकर्षक है। इस प्रकार भारत देश प्रकृति द्वारा प्रदत्त सौन्दर्य से परिपूर्ण है। इसमें चारों ओर प्राकृतिक छटाएँ विद्यमान है। अपने खूबसूरत वातावरण के कारण ही यहाँ अत्यधिक संख्या में विदेशी पर्यटक आते है। अतः भारत प्रकृति का अनूठा व अनोखा उपहार है।

BSER-16/2018

प्रश्न सं॰ (१५) का उत्तर

संत दादू भी एक महान समाज-सुधारक थे। इन्होंने लोगों को अपनी शिक्षाओं के द्वारा जागृत किया।

→ दादू द्वारा प्रदत्त शिक्षाएँ निम्न-लिखित है :—

* ये जाँत-पाँत के प्रबल-विरोधी थे।
* वे निंदा करने वालों से दूर रहते थे।
* इनका मानना था, कि जो व्यक्ति निंदा करता है, उसके हृदय में राम नहीं बसते।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

* जीवमात्र की समानता के पक्षधर थे।
* सांसारिक मोह-माया को अहंकार का कारण मानते थे।
* ये लोगों को काम-वासना से दूर रहने की शिक्षा देते थे।
* निंदा-स्तुति को समभाव से ग्रहण करने की शिक्षा देते थे।
* आलोचकों से दूर रहकर समर्थकों को सलाह प्रदान करते थे।
* दादू पाखण्ड के विरोधी थे।
* ईश्वर को ही अपना परिवार मानते थे।

प्रश्न सं. (25) का उत्तर

दादू के 'पंचतीर्थ' :- कल्याणपुर, सांभर, आमेर, नराणा, भैराणा।

प्रश्न सं. (26) का उत्तर

गुरु रामानन्द से दीक्षा लेने के उपरान्त इन्होंने वैराग्य-धारण किया। ईश्वर-प्राप्ति को लेकर इनका मन राम-काज से उचट गया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं. (27) का उत्तर

श्याम ने झूला - झूलने के लिए स्वप्न में स्थित नायिका (राधा) को आमंत्रित किया।

प्रश्न सं. (28) का उत्तर

खेतों की मिट्टी ग्रीष्म - ऋतु में वर्षा के अभाव के कारण पथराई हुई थी।

प्रश्न सं. (30) का उत्तर

(i) एक ही तरफ रास्ता संकेत

(ii) साईकल पर निषेध

(iii) हॉर्न बजाने पर निषेध

(iv) चौड़ाई सीमा (वाहन की)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न सं॰ (२१) का उत्तर

* ——— × ——— × ——— *

महाकवि निराला :—

(i) कवि निराला का जन्म 1896 ई॰ में पं॰ बंगाल के मेदिनीपुर में हुआ था। 'निराला' इनका उपनाम है। ये संघर्षशील कवि थे। बाल्यावस्था में माँ तथा किशोरावस्था तक आते-आते इनके पिता इन्हे छोड़कर संसार से चले गये। प्रथम-विश्वयुद्ध के बाद फैली महामारी में पत्नी, भाई, भाभी व चाचा भी संसार से चले गए। अतः में पुत्री सरोज की मृत्यु ने इन्हे झकझोर दिया। इन्होने अपने जीवन में मृत्यु का भयानक साक्षात्कार किया। परन्तु इन्होने ने हार नही मानी। तथा अपने तरीके से जीवन व्यतीत किया। 1961 ई॰ में 'निराला' की मृत्यु हो गई।

कृतियाँ :—

अनामिका, परिमल, गीतिका, नये-पत्ते, रानी और कानी, कुकुरमुत्ता, राम की शक्ति पूजा, अर्चना, आराधना।

देव :—

(ii) कवि देव का जन्म इटावा में 1730 ई॰ में हुआ। ये मैथिली में 'यात्री'।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपनाम से रचनाएँ लिखते है। इनकी प्रमुख रचनाएँ :— भावविलास, भवानीविलास अष्टयाम, काव्य-रसायन, देवचरित्र, प्रेमतरंगिनी आदि है।

1824 ई. में इनकी मृत्यु हुई। इनके पिता बिहारीलाल थे माने जाते हैं। ये सिद्धहस्त व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न कवि थे। ये ब्रज-भाषा का प्रयोग कर कविता रचते थे। इनकी रचनाओं में अलंकार, छंद आदि का उचित समावेश है।

प्रश्न सं. ⑦ का उत्तर

योग - व्यायाम से जीवन-विकास

* प्रस्तावना :—

योग शब्द संस्कृत की 'युज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है - जुड़ना। योग हमारी संस्कृति में प्रचलित है। योग के कारण मनुष्य के मन को शांति प्राप्त होती है। योग भारत के ऋषि, मुनियों, मनीषियों

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

की देन है। भारत ऋषियों की धरा है। अतः मानव के स्वास्थ्य हेतु ऋषियों ने अनेक जानकारियाँ प्रदान की है। योग के महत्त्व को देखकर 21 जून 2015 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। जिसमें 192 देश के लोगों ने भाग लिया। अतः वर्तमान में योग समय की आवश्यकता है। कहा भी गया है :- ॥ पहला - सुख नीरोगी काया ॥ इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु योग वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है। बिना उचित स्वास्थ्य के मनुष्य किसी भी कार्य की पूर्ति में सक्षम नहीं है।

** योग भगाए रोग **

* व्यायाम के प्रकार :—

व्यायाम के अनेक प्रकार होते हैं, जैसे :- योग, आसन, प्राणायाम, गरुडासन, कपालभाति आदि व्यायाम के प्रकार हैं। नियमित रूप से व्यायाम करने से हमें स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। योग हमारे जीवन का अमूल्य अंग है। योग प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य अनुशासन में रहना सीख जाता है। योग के माध्यम से मनुष्य आध्यात्मिक व सांसारिक रूप से प्रसन्न रहता है। योग हेतु आवश्यक है कि

BSER-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हम योग को शरीर व मन के अनुशासन से करें। योग में शरीर व आत्मा की पवित्रता निहीत है।

* **व्यायाम व योग का उद्देश्य :-**

योग के माध्यम से हमें मानसिक, शारीरिक व ~~आध्यात्मिक~~ आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है। महर्षि पतंजलि ने योग की आठ वृत्तियाँ प्रदान की। गुरु रामदेव का व्यायाम के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान है उन्होने हरिद्वार में 'योग-ज्ञानपीठ' की स्थापना की है। जिसके अनुसार रोगियों को उचित चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा है। वर्तमान में मनुष्य की दिनचर्या अनियमित होने के कारण उसे मानसिक शाँति प्राप्त नही हो पाती है। इसलिए गुरु रामदेव ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया है। वर्तमान में जगह-जगह पर व्यायाम शिविर के माध्यम से लोगों को सचेत किया जा रहा है। उन्हे जागरूक कर व्यायाम से होने वाले लाभ उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

* **व्यायाम से शारीरिक लाभ :-**

व्यायाम से मिलने वाले शारीरिक लाभ में

BSER-164/2018

कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

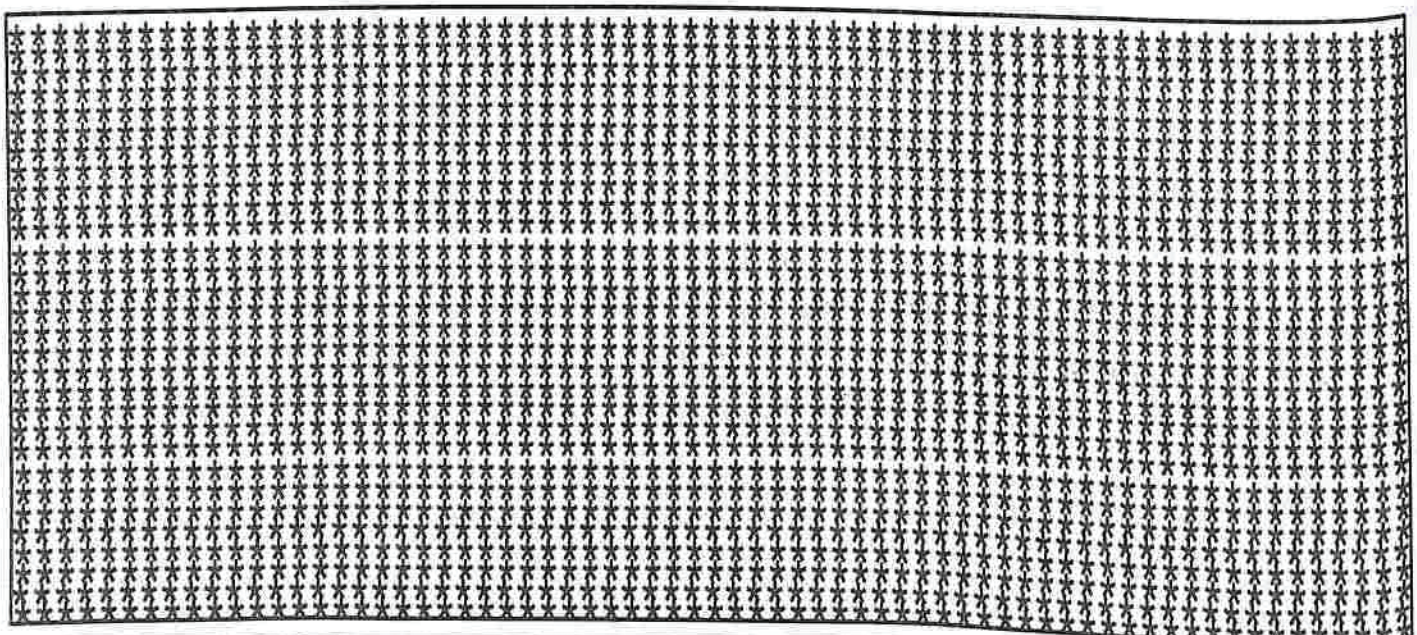

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

वृद्धि होती है। इससे शरीर का सुंदर-विकास होता है। शरीर सुडौल हो जाता है। इससे बच्चों में व्याप्त आपराधिक गतिविधियों पर नियंत्रण लगता है। तथा बच्चों मे व्याप्त हिंसक प्रवृत्तियों का विनाश होता है। अतः व्यायाम को प्रतिदिन सुचारु रूप से करने पर यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है। इससे मानसिक नियंत्रण बना रहता है।

* उपसंहार :-

अतः योग का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का समुचित विकास है। योग के प्रचार-प्रसार हेतु हमें जन-जागृति फैलानी चाहिए। ताकि लोग अपने स्वास्थ्य को उचित रखें। यदि हम स्वस्थ रहेंगे, तो बीमारियों पर किया जाने वाला खर्च कम होगा। देश का आर्थिक-विकास होता है। अतः हमें योग में स्वामी रामदेव के बलियान को स्मरण कर नियमित योग अपनाना चाहिए।

परिश्रम से असफलता का भय नही होता।
*** योग से रोग नही होता।

[समाप्त]